भारत में पढ़ते अमेरिकी छात्र

ए. वेंकट नारायण
तथा लॉरिंडा कीज लौंग

भारत में अमेरिकी युवाओं को लुभाने में हैदराबाद विश्वविद्यालय सबसे आगे है। वे भारतीय भाषाओं की शिक्षा के अलावा संस्कृति, धर्म और समाज शास्त्र के अध्ययन में भी रूचि ले रहे हैं।

यद्यपि पिछले दशकों में विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने के लिए हजारों भारतीय विद्यार्थियों ने अमेरिका की यात्रा की लेकिन लगभग 10 वर्ष पहले वहां से भी पढ़ने के लिए भारत आने की एक छोटी-सी मुहिम की शुरूआत हुई। तब से अमेरिका तथा अन्य पश्चिमी देशों से भारत आने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती गई है। वे विशेष रूप से ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रमों या ऐसे पूर्ण सेमेस्टर के लिए अधिक संख्या में आ रहे हैं जिनमें उन्हें यहां के क्रेडिट (प्राप्त अंकों) का लाभ अमेरिकी विश्वविद्यालयों में मिल जाता है। पिछले शैक्षिक सत्र में लगभग 3,500 विदेशी विद्यार्थी भारत आए। इनमें से एक विद्यार्थी है 21 वर्षीय लिंडसे ग्रॉसमैन जिन्होंने हैदराबाद विश्वविद्यालय से हाल ही में पांच माह की पढ़ाई पूरी की है। उन्होंने हिंदी, धर्म, राजनीति तथा महिला आंदोलन विषय लिए जिनमें प्राप्त क्रेडिट का लाभ उन्हें सेंट लुइस, मिसूरी स्थित अमेरिका के 10 श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में से एक वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में राजनीति विज्ञान की डिग्री में मिलेगा।

ग्रॉसमैन कहती हैं, ''मैं फोटोग्राफी की विद्यार्थी भी हूं, इसलिए महिलाओं के जीवन पर स्वतंत्र रूप से वृत्तचित्र भी बना रही हूं जिसमें मैंने शहरी और ग्रामीण महिलाओं के जीवन की तुलना की है।'' ग्रॉसमैन अमेरिकी राजनयिक बनना चाहती हैं। वह बताती हैं, ''मैं सप्ताहांत में घूमने के लिए निकल जाती हूं और महिलाओं से मिलती हूं, किसानों से बातें करती हूं।'' वह जब अपने सहपाठियों के साथ अपने एक 'भारतीय अंकल' के बाग में आम तोड़ने जा रही थी तो उसने अपने सेलफोन से 'स्पैन' के साथ बातचीत की। उन अंकल से उनका परिचय उसके एक अमेरिकी प्रोफेसर ने कराया था ताकि वे उसके वृत्तचित्र के लिए कुछ स्वयंसेवी संगठनों से उसे मिलाने में मदद कर सकें। ग्रॉसमैन कहती हैं, ''मैं महिला पुलिसकर्मियों से मिली हूं, नौकरीपेशा और प्रतिस्पर्धी पदों पर काम कर रही महिलाओं से भी मिली हूं। भारत में नाना प्रकार की महिलाओं से मिलकर मुझे बड़ी खुशी होती है।'' ग्रॉसमैन ने वाशिंगटन यूनिवर्सिटी और 2004 में राजस्थान में आयोजित ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम में हिंदी सीखी है। वह इस बार गर्मियों में अमेरिका में भी हिंदी की पढ़ाई जारी रखना चाहती हैं। ग्रॉसमैन को पढ़ने के साथ ही स्वच्छंद घूमने, भारत के निवासियों से मिलने और उनकी विविधतापूर्ण जीवनशैलियों को देखने का अवसर यों ही नहीं मिल गया। इस बारे में हैदराबाद विश्वविद्यालय के 'भारत में अध्ययन' कार्यक्रम के निदेशक और भाषा विभाग के अध्यक्ष प्रोबाल दासगुप्ता कहते हैं, ''हमारे कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर भारत की विरासत और परंपरा पर आधारित है।''

'भारत में अध्ययन' कार्यक्रम के अध्यापक यह नहीं चाहते कि विदेशी विद्यार्थी अपना पूरा समय कक्षाओं में लगाएं या कैंपस में स्थित गेस्ट हाउस में पड़े रहें। वे विदेशी विद्यार्थियों को कैंपस से बाहर जाकर खुद सीखने-समझने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। पिछले छमाही सत्र में हैदराबाद विश्वविद्यालय में 25 विदेशी विद्यार्थी पढ़ रहे थे। इस कार्यक्रम में कला तथा मानविकी पाठ्यक्रम के अंतर्गत नृत्य, वाद्य यंत्र, आधारभूत लोकतंत्र, लिंग, महिला सशक्तिकरण, धर्म की भूमिका, समाज में जाति का स्थान और ग्रामीण शिक्षा जैसे विषय पढ़ाए जाते हैं।

अपर्णा रायाप्रोल समाज विज्ञान विभाग में रीडर हैं और 'भारत में अध्ययन' कार्यक्रम के तहत विश्वविद्यालय में अध्ययन का संयोजन करती हैं। उनका कहना है, ''इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को मानव जाति शास्त्र की मूलभूत जानकारी देना है ताकि वे उस जानकारी का उपयोग भारतीय समाज के अध्ययन में कर सकें। पाठ्यक्रम नए सांस्कृतिक वातावरण को देखने और समझने में विद्यार्थियों की मदद करता है।''

कार्यक्रम के संयुक्त निदेशक और राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर प्रकाश सारंगी कहते हैं, ''विदेशी विद्यार्थियों को आमंत्रित करने के लिए हम सरकार से कोई सहायता नहीं ले रहे हैं। हम विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा अन्य संस्थानों के साथ समझौता हो जाने के बाद कार्यक्रम को शुरू करते हैं।'' वह बताते हैं कि 'भारत में अध्ययन' कार्यक्रम 1998 में शुरू किया गया जिसमें

डॉ. रवीन्द्र रेड्डी

दाएं: जूलिया हीटर (बाएं) और एमी मोटीचेक ने स्टडी इंडिया प्रोग्राम के तहत कत्थक सीखा। बिल्कुल दाएं: न्यू हैवन स्थित सदर्न कनेक्टीकट यूनिवर्सिटी में हिंदी के विद्यार्थी जेरेमी जोन्स (बाएं) यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया (लॉस एंजिलीस) के राजन धरणी के साथ संगीत का अभ्यास करते हुए।

साभार: लिंडसे ग्रॉसमैन

क्लेडा ग्रामीण स्कूल में लिंडसे ग्रॉसमैन बच्चों के साथ योगाभ्यास करते हुए। इक्कीस वर्षीय ग्रॉसमैन ने हाल ही में हैदराबाद विश्वविद्यालय से पांच महीने की पढ़ाई पूरी की है।

यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग, पेंसिल्वानिया के नौ विद्यार्थियों ने भाग लिया था। आज इस कार्यक्रम में अमेरिकी विद्यार्थियों की संख्या 200 से अधिक हो चुकी है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने 1990 के दशक में विश्वविद्यालयों को पश्चिमी देशों के विद्यार्थियों को अपने यहां पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने को कहा था। यह आयोग मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करता है। उस समय जिन 6 विश्वविद्यालयों ने 'भारत में अध्ययन' कार्यक्रम शुरू किया, उनमें से एक हैदराबाद विश्वविद्यालय भी है। आज 30 भारतीय विश्वविद्यालयों ने अपने ऐसे ही कार्यक्रम की सूचना (www.ugc.ac.in/studyindia) एक वेबसाइट में दी हुई है ।

अमेरिकी विद्यार्थी अनेक तरीकों से इन कार्यक्रमों का पता लगाते हैं। ग्रॉसमैन पढ़ने के लिए भारत वापस आना चाहती थीं लेकिन उन्हें एक ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम की आवश्यकता थी जिसके पाठ्यक्रम का लाभ अमेरिका में अपने मूल विश्वविद्यालय में भी मिल सके। उन्होंने 2004 की गर्मियों में दक्षिण एशिया के अनेक कार्यक्रमों के अंतर्गत पढ़ाई की। वह कहती हैं, ''विद्यार्थी भारतीय परिवारों में रहते हैं और जगह बदलते रहते हैं। फिर भी, मैं इस बार विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययन करना चाहती थी।'' ग्रॉसमैन ने 2004 की गर्मियों में राजस्थान के चित्तौड़गढ़ के बाहर एक गांव में इतिहास की पढ़ाई की थी।

उन्हें अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक आदान-प्रदान परिषद के बारे में जानकारी थी जिसकी ओर से 1947 से ही विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा कॉलेज प्रशासकों के लिए अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। ग्रॉसमैन कहती हैं, ''वे विश्व भर में कार्यक्रम चलाते हैं और हैदराबाद विश्वविद्यालय से भी उनका संबंध है।'' असल में अगर कोई भी व्यक्ति (www.ciee.org) वेबसाइट पर जाकर study तथा India टाइप करेगा तो उसे एक ही विकल्प मिलेगा- हैदराबाद विश्वविद्यालय।

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, लॉस एंजिलीस में राजनीति विज्ञान के विद्यार्थी तथा हैदराबाद कार्यक्रम के एक पुराने छात्र राजन धरणी ने भारत के बारे में अपने माता-पिता से सुना था और थोड़ी-बहुत जानकारी थी। वह कहते हैं, ''यहां आने से पहले मैंने भारत के बारे में यद्यपि बहुत पढ़ा था लेकिन यहां आकर आशा के विपरीत मुझे बिल्कुल नया और अलग अनुभव हुआ। धरणी का जन्म अमेरिका में ही हुआ। उसके माता-पिता भारतीय मूल के अमेरिकी डॉक्टर हैं। विगत सर्दियों में हैदराबाद में अध्ययन के दौरान उसने वैश्विक मामलों में भारत की भूमिका पर विशेष ध्यान दिया और अब वह किसी अंतरराष्ट्रीय संस्था या कार्पोरेशन में अपना भविष्य आजमाना चाहते हैं। और हां, उन्होंने तबला सीखना जारी रखा है जिसे सीखने का सपना वह बचपन से देखते रहे हैं।

डॉ. रवींद्र रेड्डी

लोयोला यूनिवर्सिटी, न्यू आर्लिएंस की एमी मोटीचेक ने हैदराबाद विश्वविद्यालय के 'सरोजनी नायडू स्कूल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, फाइन आर्ट्स एंड कम्युनिकेशंस' की प्रमुख अनुराधा जोनालागड्डा के मार्गदर्शन में कत्थक सीखा। पिछले वर्ष सितंबर में मोटीचेक ने कैंपस में आयोजित कार्यक्रमों में नृत्य का एकल प्रदर्शन भी किया। वह कहती हैं, ''भारतीय शास्त्रीय नृत्य से मुझे असीम लाभ मिला है। इसमें केवल शारीरिक संचालन ही नहीं है, बल्कि गीत, संगीत, आंखों, पैरों और हाथों का मिला-जुला सुनियंत्रित स्वरूप है जो इस नृत्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।''

ग्रॉसमैन को प्रोफेसर मंजरी काट्जू के पढ़ाए दो पाठ्यक्रमों में सबसे अधिक आनंद आया। उनका कहना है कि प्रोफेसर काट्जू 'पक्की नारीवादी, धर्म निरपेक्ष, आत्मीय और मृदुभाषी' हैं। उनमें से एक पाठ्यक्रम आधुनिक तथा

उत्तर-औपनिवेशिक काल के भारत में महिला आंदोलनों पर था। वह कहती हैं, ''मैं अपनी सीनियर थीसिस महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों पर लिख रही हूं। इसलिए इस विषय की पढ़ाई से मुझे काफी मदद मिल रही है। साथ ही, धर्म और राजनीति की कक्षा भी मजेदार रही।'' उन्होंने भारतीय और विदेशी दोनों तरह के विद्यार्थियों से मित्रता बढ़ाई। वह बताती हैं, ''हम पर पढ़ाई का बोझ उतना अधिक नहीं था, इसलिए हैदराबाद में हम खूब घूमे, खूब दोस्त बनाए। पब, रेस्तरां, कॉफी हाउस में गए और सिनेमा देखा। हम बहुत घुल-मिल कर रहते थे और दक्षिण भारत में खूब घूमे। मुझे हिंदी बोलते हुए देखकर कई लोग चहक उठते हैं। वे यह देख कर हैरान हो जाते हैं कि यह छह फुटी लड़की हिंदी बोल रही है।''

वह कहती हैं, ''मेरे विचार से वांशिगटन यूनिवर्सिटी की तुलना में हैदराबाद में प्रतिस्पर्धा का माहौल कम है। कुल मिलाकर मैंने देखा कि यहां ग्रेडिंग आसान है। लेकिन, विश्वविद्यालय में विज्ञान विषयों का आधार बहुत मजबूत है। यहां विज्ञान पर अधिक बल दिया जाता है और मानविकी से संबंधित विषयों को अधिक महत्व का नहीं समझा जाता है।''

सदर्न कनेक्टिकट स्टेट यूनिवर्सिटी, न्यू हेवन में जीवविज्ञान तथा वैश्विक अध्ययन के विद्यार्थी जेरेमी जोंस ने गत वर्ष हैदराबाद विश्वविद्यालय में सितार और हिंदी भाषा का अध्ययन किया। वह कहते हैं, ''हमारे अपने विश्वविद्यालय में एशियाई या भारत संबंधी अध्ययन की व्यवस्था नहीं है, इसलिए मैंने इस ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम में भाग लिया। मैं विदेश में काम करना चाहता हूं, इसलिए किसी अन्य देश के अनुभव और उसकी जानकारी से मुझे कॅरिअर बनाने में मदद मिलेगी।'' उनकी शिक्षक ममता सैनी कहती हैं, ''शुरू में इन्हें हिंदी सिखाने में मैंने सख्ती बरती लेकिन तीन माह के भीतर ही इन्होंने हिंदी में बोलना और कुछ वाक्य लिखना सीख लिया।'' जोंस ने दूसरे छमाही सत्र में भी पढ़ाई जारी रखी।

ग्रॉसमैन ने अपना पाठ्यक्रम देखा जिसमें 10 पृष्ठ राजनीति में धर्म और 4 पृष्ठ हिंदी के लिए थे। फिर वह राजस्थान गईं और घर लौटने से पहले उन्होंने नई दिल्ली में भी शोध कार्य किया। वह कहती हैं, ''मेरा अनुभव अच्छा और पूर्ण रहा। मैंने एक गैरसरकारी संस्था के साथ काम किया और सप्ताह के आखिरी दिन गांवों में बिताए। साथ ही, संभ्रांत वर्ग के लोगों के साथ रेस्तरांओं में भी गईं और आलीशान हवेलियों में भी। इस तरह मैंने भारत के पूरे आर्थिक परिदृश्य का जायजा लिया और आज के भारत के बारे में यह बहुत कुछ कहता है। मैं यही तो चाहती थी: भारत के बारे में बेहतर जानकारी, जो मुझे मिल गई।'' □

प्रेस की आज़ादी खतरों से हो वाकिफ

माधुरी सहगल

रिपोर्टर डेनियल पर्ल के जीवन पर आधारित भारतीय फिल्म निर्माता रमेश शर्मा का वृत्तचित्र हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि आखिर पत्रकार खतरे की राह पर क्यों निकल पड़ते हैं?- जवाब है, सच की तलाश और उसे सामने लाने के लिए।

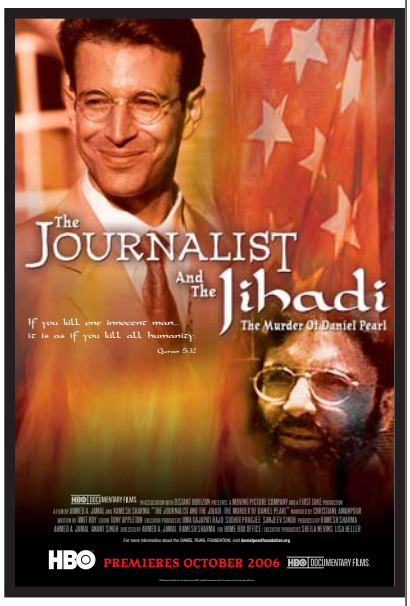

साभार: एचबीओ

अब यह दुर्भाग्य से कोई असाधारण तस्वीर नहीं रही- फोटोग्राफ या वीडियो में पत्रकार के सिर पर तनी हुई बंदूक जिसमें बंदूकधारी या तो दिखाई नहीं देता या उसके चेहरे पर नकाब है। विश्व भर में प्रेस की स्वतंत्रता की वकालत करने और पत्रकारों की सुरक्षा के लिए गठित गैर मुनाफे वाली स्वतंत्र समिति के अनुसार 2006 के प्रथम पांच महीनों में ही 13 पत्रकार मारे गए जिसमें असम से प्रकाशित असोमिया खबर के प्रहलाद गोआला भी शामिल है। वे या तो अपना कर्तव्य निभाते हुए मारे गए या उन्हें उनकी रिपोर्टिंग या समाचार संस्था से जुड़ा होने के कारण जानबूझ कर निशाना बनाया गया।

मुंबई स्थित 'द वाल स्ट्रीट जर्नल' के ब्यूरो चीफ डेनियल पर्ल भी वर्ष 2002 में मारे गए पत्रकारों में से एक थे। पर्ल जब 11 सितंबर 2001 की घटना से संबंधित अपहर्ताओं के सूत्रों और उन्हें मिलने वाली आर्थिक मदद, पेरिस-मियामी उड़ान में जूता-बम का विस्फोट करने का प्रयास करने वाले रिचर्ड रीड और दक्षिण एशियाई आतंकवादियों के बारे में सच्चाई का पता लगा रहे थे तो पाकिस्तान के कराची शहर में उनका अपहरण करके उनकी हत्या कर दी गई और सिर कलम कर दिया गया। इस घटना के लिए जिम्मेदार अनेक लोगों के साथ ब्रितानी नागरिक ओमर शेख को भी गिरफ्तार करके मुकदमा चलाया गया और जुर्म के लिए सजा दी गई।

रमेश शर्मा के 90 मिनट के वृत्तचित्र *द जर्नलिस्ट एंड द जिहादी: द मर्डर ऑफ डेनियल पर्ल* में पर्ल और शेख के जीवन पर समानांतर दृष्टि डाली गई है। इस वृत्तचित्र के प्रीमियर के लिए इसे 7 मई को समाप्त हुए न्यूयॉर्क के ट्राइबेका फिल्म समारोह में विशेष रूप से प्रदर्शित किया गया। इसे केन्स फिल्म समारोह में प्रदर्शित करने की योजना है।

इस वृत्तचित्र को शर्मा की मूविंग पिक्चर कंपनी ने अमेरिका स्थित एच. बी. ओ. डाक्यूमेंटरी फिल्म्स, लंदन स्थित अहमद जमाल की फर्स्ट टेक और अनंत सिंह की डिस्टेंट होराइजन कंपनी के सहयोग से तैयार किया। कथा वर्णन डेनियल पर्ल फाउंडेशन के बोर्ड के सदस्य तथा सी.एन.एन. पत्रकार क्रिस्टिएन अमनपोर ने किया है। एच.बी.ओ. अमेरिका में इस वृत्त चित्र का प्रदर्शन पर्ल के जन्मदिन पर 10 अक्टूबर को करेगा लेकिन भारत में इसके प्रदर्शन की अब तक कोई योजना नहीं है।

शर्मा कहते हैं, ''यह फिल्म महज सिनेमा की चीज नहीं है। यह हमारे समय के एक महान पत्रकार की कहानी है जिसे बताना जरूरी था।'' उन्होंने जमाल के साथ इस वृत्तचित्र का सह-निर्देशन किया है। वह कहते हैं, ''दो वर्ष पहले मैं किसी दूसरी फिल्म के लिए शोध कर रहा था, तभी मुझे पर्ल और शेख की कहानी का पता चला। उसी दौरान लंदन में मेरी भेंट अहमद जमाल से हुई जो शेख पर फिल्म बनाने की सोच रहे थे। तब हमने इन दोनों की कहानी को जोड़कर फिल्म बनाने का निश्चय किया।''

शर्मा कहते हैं, ''पर्ल और शेख के जीवन में कई मायनों में समानता थी। वे सुविधा-संपन्न घरों में पले-बढ़े उच्च शिक्षित व्यक्ति थे। उन दोनों का दुनिया को देखने का नजरिया अलग-अलग जरूर था लेकिन उत्साह और संकल्प एक समान था। पर्ल मानवतावादी पत्रकार थे जिसने आपसी सांस्कृतिक समझ को बढ़ाने के लिए अपनी ज्यादातर रिपोर्टिंग इस्लामी देशों से की थी। शेख आतंकवादी था जिसने अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए हिंसा का रास्ता अपनाया। 11 सितंबर की घटना के बाद पाकिस्तान में उनका सामना हुआ जिसका परिणाम त्रासद रहा।'' वर्ष 2002 में पत्रकारों की सुरक्षा के लिए गठित समिति ने पर्ल की मृत्यु पर शोक व्यक्त करते हुए कहा था: ''पर्ल की सच में अटूट आस्था थी और उनकी मृत्यु इसी की तलाश में हुई।'' □